गायत्री का वैज्ञानिक दर्शन

ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

भावार्थ :उस प्राण स्वरुप दुख नाशक सुख स्वरुप श्रेष्ठ तेजस्वी पाप नाशक देव स्वरुप परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें।

गायत्री महाशक्ति का आविर्भाव ज्येष्ठ माह की शुक्ल पक्ष की दशमी की मध्यरात्रि में हुआ है। अतः इसका उपवास पुण्य दूसरे दिन एकादशी को माना जाता है। गायत्री महामंत्र का वर्णन करते हुये ऋषियों ने इसे तारक मंत्र बताया है और कहा है जो इसकी शरण पकड़ेगा उसे भवबंधन से, भवसागर से उबरते देर नहीं लगेगी। यह महाशक्ति उसे डूबने से बचा लेगी। शंख स्मृति में उल्लेख है :–

गय या परमं नास्ति दिविचेत च पावनम्
हस्त त्राणं प्रदा देवी पततां नरर्वीणवे ।।

अर्थात् नरक रुपी समुद्र में गिरते हुये को हाथ पकड़कर बचाने वाली गायत्री के समान पवित्र करने वाली वस्तु इस पृथ्वी तथा स्वर्ग में कोई नहीं है। गायत्री मंत्र के शब्दार्थ से भी प्रकट है गय। अर्थात् प्राण और ''त्री'' अर्थात् त्राण करने वाली। जो प्राणों का परित्राण, उद्वार व संरक्षण करे वह गायत्री। मंत्र शब्द का अर्थ है, मनन। मंत्र के शब्दार्थ पर महार्थ मंजरी में वक्तव्य आया है।

''मनन त्राण धर्माणों मंत्रः''। अर्थात् मनन और त्राण मंत्र के ये दो धर्म है।

गायत्री महामंत्र में शब्दों का गुंथन कुछ इस प्रकार वैज्ञानिक विधि से हुआ है कि, उसके जप से साधक की अन्तः चेतना में सविता देवता सूर्य तेज भर्ग के समाविष्ट होने से प्रसुप्त सूक्ष्म संस्थानों में जागृति आती है, जिससे सभी कषाय–कल्मष धुलते चले जाते हैं। सौर चेतना का अविरल प्राण–प्रवाह होने लगता है और देवी वरदानों की भांति सद्बुद्वि प्राप्त होती है। गायत्री मंत्र के साधक अनुभव करते हैं कि, कोई अज्ञात शक्ति रहस्यमय ढंग से उनके मनः क्षेत्र में नवीन ज्ञान, प्रकाश, उत्साह आश्चर्यजनक रीति से बढ़ा रही है। गायत्री साधना से तत्काल आत्मबल प्राप्त होता है।

मंत्र विद्या के वैज्ञानिक (ऋषिगण) जानते थे कि, मुख से जो शब्द निकलते है उनका उच्चारण कंठ, तालू, मूर्धा, ओष्ठ, दंत व जिव्हामूल आदि मुख के विभिन्न अंगों द्वारा होता है। इस उच्चारण काल में मुख के जिन भागों से ध्वनि निकलती है, उन अंगों के नाड़ी, तंतु व ग्रंथियों पर उच्चारण का दबाव पड़ता है। जिन लोगों की कोई सूक्ष्म ग्रंथि कमजोर या नष्ट होती है, तो उनके मुख से कुछ खास शब्द रुक–रुक कर निकलते है, जिसे तुतलाना या हकलाना कहते हैं। इसी आधार पर ऋषि–मनीषियों ने इनमें से मात्र 24

ऐसी ग्रंथियां खोज निकाली है, जिनके अंदर असीम शक्तियां सुप्त अवस्था में विद्यमान है। गायत्री मंत्र से इन शक्तियों को जागृत कर लिया जाये तो मानव महामानव बन सकता है। इन ग्रंथियों के जागृत होने पर ये सद्‌बुद्धि प्रकाशक शक्तियों को जागृत करती हैं।

शब्दों का ध्वनि प्रवाह कोई तुच्छ चीज नहीं है। शब्द विद्या के आचार्य जानते है कि, शब्द में कितनी शक्ति है और उसके क्या–क्या परिणाम उत्पन्न हो सकते है। शब्द को ब्रम्ह कहा गया है, जिस तरह घड़ी का लटकन घंटा पेंडुलम झूमता हुआ घड़ी के पुर्जो में चाल पैदा करता है उसी तरह ऊँकार ध्वनि प्रवाह सृष्टि को चलाने वाली गति पैदा करता है। आगे चलकर इसकी तीन प्रधान धारायें सत, रज व तम बहती हैं। ये तीनों धारायें अपने–अपने क्षेत्र में सृष्टि का संचालन करती हैं। गायत्री की शब्दावली भी ऐसे चुने श्रृंखलाबद्ध शब्दों से बनाई गई है, जो क्रम और गुम्फन की विशेषता के कारण अपने ढंग का एक अद्‌भुत शक्ति प्रवाह उत्पन्न करती है, जिसके कारण शरीर के विभिन्न भागों में अवस्थित यौगिक लघु चक्र जाग्रत होते हैं और मनुष्य योगी बनता है। दीपक राग गाने से बुझे दीपक जल उठते हैं। वेणुनाद सुनकर सर्प लहराने लगते है। मृग सुधि भूल जाते है। सैनिकों के कदम मिलाकर चलने की शब्द ध्वनि लोहे के पुल तक गिर सकते हैं। अतः पुल पार करते समय सेना को कदम न मिलाकर चलने की हिदायत दी जाती है। गायत्री मंत्र द्वारा भी इसी तरह शक्ति का आविर्भाव होता है। मंत्रोच्चारण में मुख के जो अंग क्रियाशील होते हैं उन भागों में नाड़ी तंतु कुछ विशेष ग्रंथियों को गुद्‌गुदाते हैं, उनमें स्फुरण होने से एक वैदिक छन्द का क्रमवद्ध योगिक संगीत प्रवाह ईथर तत्व में फैलता है और कुछ क्षणों में विश्व परिक्रमा करके वापिस आते–आते एक स्वजातीय तत्वों की सेना ले आता है, जो अभीष्ट उद्‌देश्य की पूर्ति में सहायक होते है।

गायत्री एक विश्वव्यापी तत्व है, जिसे हीं–बुद्धि, श्री–समृद्धि और क्लीं–शक्ति इन गुणात्मक विशेषताओं का उद्‌गम कहा जा सकता है। चूंकि ये तीनों तत्व मनुष्य के लिये अत्यंत उपयोगी है एवं आवश्यक हैं। अतः ऋषियों ने गायत्री उपासना मानव के लिये रोटी, कपड़ा और मकान की भांति अनिवार्य बताई है। विश्वव्यापिनी गायत्री जब आकाश शब्द से टकराकर तद्व तन्मात्रा में प्रतिध्वनित होती है, उस समय 24 अक्षरों वाले गायंत्री मंत्र के समान ध्वनि उत्पन्न होती हैं। हम अपने स्थूल कानों से उसे नहीं सुन सकते। लेकिन ऋषियों ने उसे अपनी दिव्य कर्णेन्द्रियों से सुना और उस स्वर लहरी को गायत्री के 24 अक्षरों के रुप में पकड़ लिया फिर मानव को गायत्री मंत्र का जप करने हेतु प्रेरित किया, ताकि उसके लाभों को लिया जा सके।

स्थूल वस्तु की सहायता से स्थूल को पकड़ने की विद्या सब जानते हैं जैसे :– हाथ से कलम पकड़ना, चिमटे से अग्नि पकड़ना पर अदृश्य वस्तु को पकड़कर उससे लाभ उठाने की कला विरले ही जानते है। जिस तरह वैज्ञानिक आविष्कार के पूर्व बिजली, गैस, भाप व परमाणु आदि थे, पर लोग उन्हें पकड़ना नहीं जानते थे अतः उससे प्राप्त लाभों से बंचित थे। हमारे वैज्ञानिकों ने कोई नई चीज का आविष्कार नहीं किया बल्कि उन चीजों से लाभ उठाने की विधि विकसित की है। इसी तरह दैवी शक्ति यंत्रों की पकड़ के बाहर है, हमारे ऋषियों ने मंत्रों द्वारा उन्हें पकड़ा व लाभ उठाया है।

जमा हुआ मोम तेल में नहीं मिलता किंतु अग्नि में पिघला देने से वह तेल में घुलमिल जाता है, उसी तरह सूक्ष्म शक्तियां हरेक को प्राप्त नहीं होती किंतु साधना द्वारा अपने अन्तः स्थल को पिघला देने पर ये दुर्लभ शक्तियां आत्मसात् हो जाती हैं।

मनुष्य का शरीर और मन पंच तत्वों से बना हुआ है। पंच तत्वों से गायत्री शक्ति का सम्मिलन होते समय सूक्ष्म जगत में जो प्रतिक्रिया होती है, वैसी ही मानसिक प्रतिक्रिया यदि हम अपने मनः क्षेत्र में उत्पन्न करें तो हम आसानी से गायत्री तक पहुंच सकते है।

गायत्री मंत्र को और अधिक सूक्ष्म बनाने वाला कारण है, साधक की श्रद्धा और विश्वास। रामायण में तुलसीदास जी ने ''भवानीशंकरौ बिन्दे श्रद्धा विश्वास रुपणी'' गाते हुये श्रद्धा और विश्वास को भवानी शंकर की उपमा दी है। श्रद्धा और विश्वास के कारण मानव अन्तःकरण की बिखरी हुई शक्तियां एक स्थान पर केन्द्रित हो जाती हैं। इस एकीकरण को अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति में दौड़ाया जा सकता है।

जैसा कि हिप्नोटिज्म में किया जाता है। प्राचीनकाल में ऋषि मुनि योगी, तपस्वी गायत्री को माध्यम बनाकर योग साधना करते थे। गायत्री को भूलोक की कामधेनु कहा जाता है, क्योंकि इसी उपासना से सभी तृष्णायें शांत हो जाती हैं। गायत्री को ब्रम्हास्त्र कहा गया है। यह लोहे से बनी प्राणहरण क्षमता रखने वाली कोई साधारण तोप नहीं है, बल्कि वह शक्ति है जो जीवन की उलझनें सुलझाती हुई सब सुख प्रदान करती हैं। इसी कामधेनु और ब्रम्हास्त्र को पाकर ऋषियों ने वह बल प्राप्त किया था, जिसके आगे चक्रवती सम्राट नतमस्तक होते थे।

इसके अतिरिक्त गायत्री मंत्र आयु बढ़ाने की अद्‌भुत क्षमता रखता है। शरीर विज्ञान के अनुसार मनुष्य 1 मिनिट में 15 श्वासें लेता है, किंतु वही मनुष्य जब गायत्री जप करता है, तो उसकी श्वासें 1 मिनिट में सात या आठ रह जाती है अर्थात् सात श्वासों में कमी हुई। वैज्ञानिक मानते है कि, जो प्राणी जितनी कम सांसे लेता है, वह उतना ही दीर्घजीवी होता है। इस तरह गायत्री साधक नियमित जप के माध्यम से दीर्घायु प्राप्त करता है। यह शक्ति अन्य मंत्रों में अपेक्षाकृत कम पाई जाती है।

महर्षि व्यास कहते हैं कि, जिस तरह पुष्प का सार शहद, दूध का सार घृत है, उसी प्रकार समस्त वेदों का सार गायत्री है। ''गायत्री के संबंध में महात्मा गांधी का कथन है – गायत्री मंत्र का निरंतर जप रोगियों को अच्छा करने और आत्माओं की उन्नति के लिये उपयोगी है।'' मदन मोहन मालवीय ने कहा था – ऋषियों ने जो अमूल्य रत्न हमें दिये हैं, उनमें से एक अनुपम रत्न गायत्री है। इस प्रकार गायत्री मंत्र साधना कोई अंधविश्वास नहीं एक ठोस वैज्ञानिक कार्य है।

इस तरह गायत्री मंत्र ठोस विज्ञान पर आधारित एक सार्वभौम मंत्र है। गायत्री मंजरी में कहा गया है –

''भूलोक स्वास्थ्य गायत्री कामधेनु गंता वुधेः ।
लोक आश्रायणे नामं सर्व मेरा धिगच्छति।।

अर्थात् विद्वानों ने गायत्री को भूलोक की कामधेनु कहा है, इसका आश्रय लेकर हम सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं। गायत्री का इष्ट रुप में वरण सर्वोत्तम है।

डॉ. श्रीमति कुसुम गुप्ता,
21, गायत्री नगर, ग्वालियर

♦ ♦ ♦ ♦ ♦